आचार्य अमरकीर्ति

जीवन-परिचय : आचार्य अमरकीर्ति काष्ठासंघान्तर्गत उत्तर माथुर संघ के विद्वान मुनि चन्द्रकीर्ति के शिष्य एवं अनुज थे। अमरकीर्ति की माता का नाम 'चर्चिणी' और पिता का नाम 'गुणपाल' था। अमरकीर्ति आचार्य ने अपनी गुरु-परम्परा का उल्लेख इस प्रकार किया है—अमितगति द्वितीय के शिष्य शन्तिषेण, उनके शिष्य अमरसेन, उनके शिष्य श्रीषेण, उनके शिष्य श्रीचन्द्र और उनके शिष्य अमरकीर्ति आचार्य हैं।

आचार्य अमरकीर्ति का समय विक्रम की 12-13वीं शताब्दी है।

रचना-परिचय : आचार्य अमरकीर्ति के द्वारा रचित निम्न रचनाओं का उल्लेख मिलता है—

1. णेमिणाहचरिउ, 2. महावीरचरिउ, 3. जसहरचरिउ, 4. धर्मचरित टिप्पण, 5. सुभाषितरत्न निधि, 6. धर्मोपदेश, 7. झाणपईव (ध्यानप्रदीप), 8. षट्कर्मोपदेश, 9. पुरन्दरविधान कथा।

परन्तु इनमें से केवल तीन ही रचनाएँ उपलब्ध हैं—

1. णेमिणाहचरिउ : इस ग्रन्थ में 25 सन्धियाँ हैं, जिनकी कुल श्लोक-संख्या 6895 हैं। इसमें जैनियों के बाईसवें तीर्थंकर भगवान नेमिनाथ की जीवन-गाथा अंकित है। इस ग्रन्थ को कवि ने संवत् 1244 भाद्रपद शुक्ल चतुर्दशी को समाप्त किया था। यह प्रति सोनागिरि के भट्टारकीय शास्त्रभंडार में सुरक्षित है।

2. छक्कम्मोवएस : अमरकीर्ति ने इस ग्रन्थ में गृहस्थों के षट्कर्मों का उपदेश दिया है। षट्कर्म हैं—देवपूजा, गुरुसेवा, स्वाध्याय, संयम, तप और त्याग। इस ग्रन्थ में 14 सन्धियाँ और 215 श्लोक हैं। यह ग्रन्थ अभी अप्रकाशित है।

3. पुरन्दरविधान कथा : इस कथा में देवपूजा का विस्तृत वर्णन किया है। इसमें पुरन्दरव्रत का नियम भी बतलाया है। यह व्रत किसी भी महीने के शुक्ल पक्ष में किया जा सकता है। कवि ने इस ग्रन्थ को अम्बाप्रसाद के लिए बनाया है।